एकलव्य का प्रकाशन

चूहे को मिली पेंसिल

एक चित्रकथा

वी. सुतेयेव

चूहे को मिली पेंसिल
Chuhe Ko Milee Pencil

चित्र और कहानीः वी. सुतेयेव
स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की एक चित्रकथा
प्रगति प्रकाशन, मास्को के सौजन्य से प्रकाशित।

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
किफायती संस्करणः अप्रैल 2008 / 7000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो
ISBN: 81-87171-91-X
यह किफायती संस्करण अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है।

प्रकाशकः एकलव्य, ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in
pitara@eklavya.in

मुद्रकः भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल (0755) 246 3769

एक बार एक चूहा खाने के लिए कुछ ढूँढ रहा था। उसे एक पेंसिल मिली। चूहा पेंसिल लेकर अपने बिल में घुस गया।

“मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो,” पेंसिल चूहे से गिड़गिड़ाकर बोली। “मैं तुम्हारे किस काम की हूँ, लकड़ी का टुकड़ा हूँ। खाने में भी अच्छी नहीं लगूँगी।”

“मैं तुम्हें कुतरूँगा,” चूहे ने कहा। “मुझे अपने दाँत पैने और छोटे रखने के लिए हमेशा कुछ न कुछ कुतरना पड़ता है।” और, चूहे ने पेंसिल कुतरना शुरू कर दिया।

“उई। मुझे दर्द हो रहा है,” पेंसिल ने कहा। “मुझे एक आखिरी चित्र बना लेने दो, फिर तुम जो चाहो करना।”

“ठीक है,” चूहे ने कहा, “तुम चित्र बना लो। फिर मैं चबाकर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।”

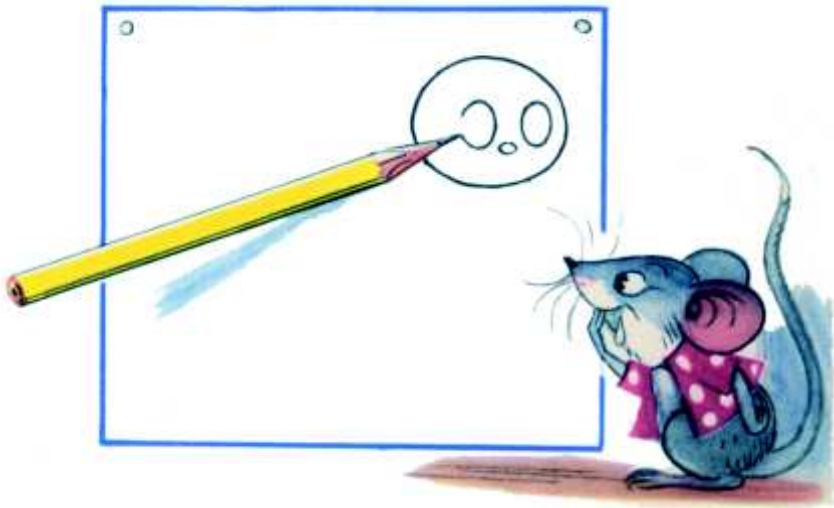

पेंसिल ने ठण्डी साँस ली। और एक बड़ा-सा गोला और उसके अन्दर तीन छोटे गोले बना दिए।

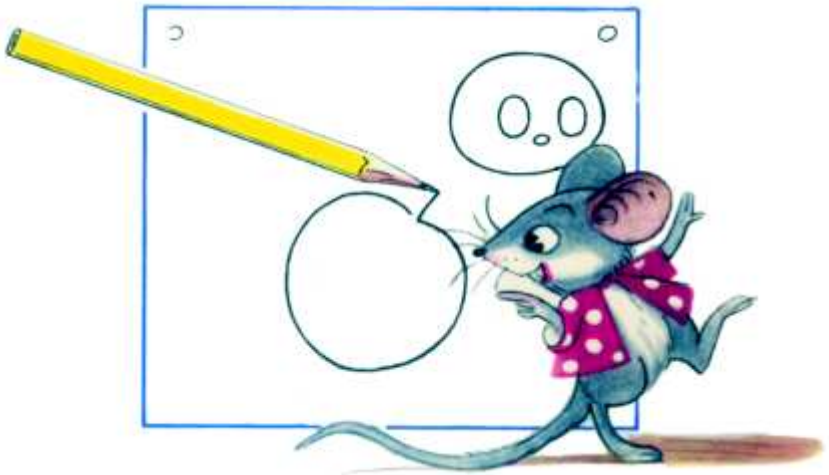

“यह क्या पनीर का टुकड़ा है?” चूहे ने पूछा।

“चलो, हम इसे पनीर बोलेंगे,” पेंसिल ने मान लिया और उसने बड़े गोले के नीचे एक और बड़ा गोला बनाया।

“अरे यह तो सेब है,” चूहा चहका।

“हाँ, इसे सेब कह लेते हैं,” पेंसिल ने कहा। पेंसिल फिर दूसरे बड़े गोले के पास कुछ अजीब से चित्र बनाने लगी।

“अरे वाह! अब तो मज़ा ही आ गया। ये तो ककड़ी हैं।” चूहे के मुँह में पानी आने लगा। “जल्दी करो। मुझे खाना है।”

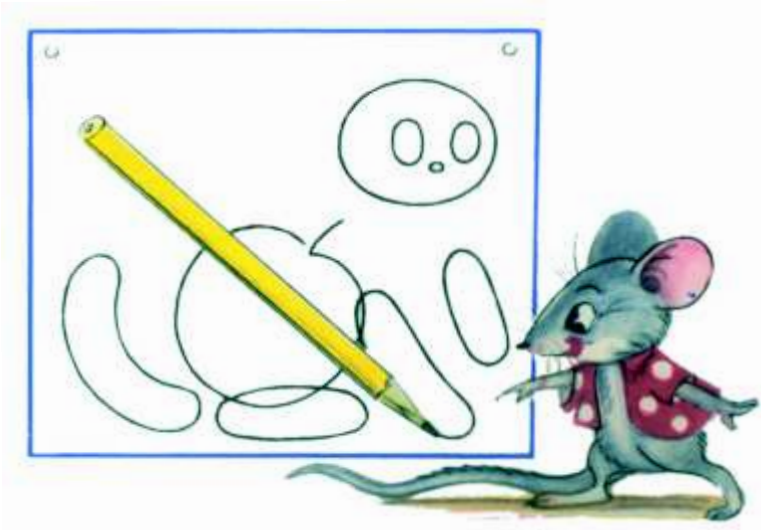

पेंसिल ने ऊपर वाले गोले के ऊपर दो छोटे तिकोन बना दिए।

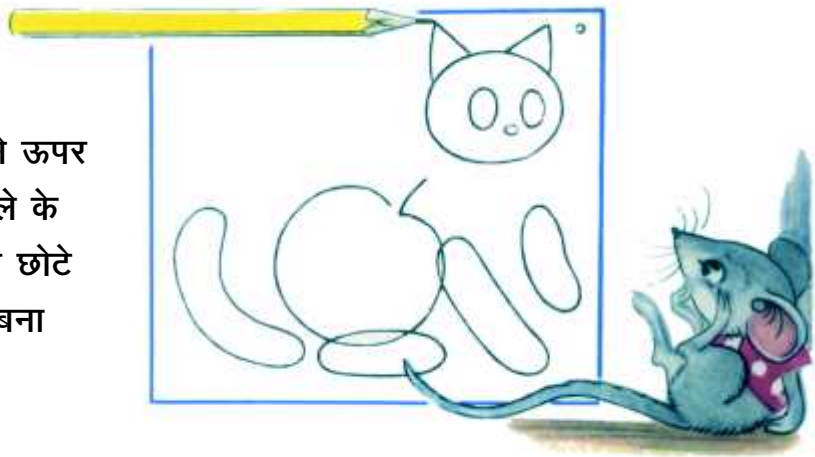

"अरे, अरे!" चूहा चीखा। "अब तो तुम उसे बिल्ली की तरह बनाने लगीं। और आगे मत बनाओ।"

लेकिन पेंसिल बनाती गई। उसने ऊपर के गोले पर लम्बी-लम्बी मूँछें और मुँह बनाया।

चूहा डरकर चिल्लाया, “अरे बाप रे! यह तो बिल्कुल असली बिल्ला लग रहा है। बचाओ!”

ऐसा कहकर वह भागकर अपने बिल में घुस गया।

क्या तुम एक बिल्ले का ऐसा चित्र बना सकते हो जिसे देखकर चूहा डर जाए?

ISBN: 81-87171-91-X

ग्रामीण पाठकों के लिए विशेष किफायती संस्करण

AN EKLAVYA PUBLICATION

THE MOUSE AND THE PENCIL

A PICTURE STORY

V. SUTEYEV

And the mouse cried out in terror,
"It's a real cat! Help!"

Now see if YOU can draw a cat that looks real enough to frighten away the mice!

Price: Rs. 6.00